मैं हिंदी हूँ ...

संपादक

रूपा देवी

सह - संपादक

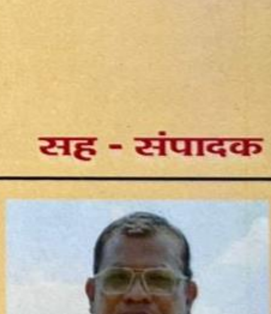

ए सांबशिव राव

इस साझा पुस्तक के प्रकाशन के बाद तत्संबंधित किसी भी प्रकार का विवाद या आलोचना उठती है तो उक्त रचना के रचनाकार कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होंगे। पुस्तक में संकलित रचना के सर्वाधिकार रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। उनकी लिखित अनुमति के बिना किसी भी अंश की फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित, प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण : 2022

सामग्री कॉपीराइट : संबंधित रचना के रचनाकार स्वयं
पुस्तक कॉपीराइट : गीता प्रकाशन

प्रकाशक : गीता प्रकाशन
4-2-771, रामकोट चौरस्ता,
हैदराबाद 500001 तेलंगाना भारत
सेल : 9849250784
geetaprakashan7@gmail.com

ISBN : 978-93-91934-19-4

Mein Hindi Hun...

collection of Articles, Poems & Stories

यह पुस्तक समर्पित है
हर उस व्यक्ति को जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष साहित्य सेवा में लीन है

बंजारा लोकगीतों में पर्व एवं सामाजिक जन–जीवन

- डॉ. ए. बाबू

शोध सारांश

पर्व समाज का एक विशिष्ट अंग होता है। पर्व आते ही समाज में एक ऊर्जा आ जाती है। किसी भी समाज का यह पर्व विशेष संस्कृति की धरोहर होते हैं। मस्ती एवं मौज के मूड में हर समय जीवन यापन करने वाला बंजारा समाज सामाजिक जन–जीवन में उल्लास और दोगुना बड़ा जाते हैं साल के आने वाले पर्व। बंजारा समाज के जीवन में वर्ष के आने वाले पर्व मात्र केवल पर्व नहीं हैं बल्कि इनके साज की प्राचीन जीवन पद्धति की विशिष्ट शैली है जो आज भी इनके टांडो में अपने प्राचीन स्वरूपों में जीवंत हैं।

बंजारा समाज के सामाजिक धरातल पर यह पर्व जब–जब आते हैं बंजारा समाज के ह्रदय को मजबूरी के साथ बाँधकर जाते हैं। टांडे का मालिक इन परम्परा एवं प्रथाओं के द्वारा सकल समाज को एकता के सूत्र में पिरोये हुए चलता है। वैसे तो हर वर्ष में पड़ने वाले सभी त्यौहार इनके जीवन में रंगत लाते हैं लेकिन होली, दीवाली, दशहरा तथा तीज पर्व विशेष मायने रखते हैं। इन पर्वों के द्वारा तितर–बितर टांडो में हरियाली आ जाती है। और संगठन बहुत मजबूत होता जाता है। सकल बंजारा समाज इन पर्वों के द्वारा अपनी प्राचीन पूजा पद्धति के द्वारा अपने इष्ट देवी एवं देवताओं की तन्मयता के साथ भक्ति भावना करता है। बलि देकर देवियों को प्रसन्न करता है ताकि उसका टांडा हर हारी बीमारी से सलामत रहे जो बंजारा समाज लोकगीतों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

बंजारा लोकगीत केवल गीत नहीं हैं बल्कि बंजारा समाज का लोक–जीवन है। यह कदम–कदम पर गाए जाते हैं। मौसम के हिसाब से पर्व बदलते हैं और पर्व के हिसाब से इनके गीत बदलते जाते हैं।

बीज शब्द

बंजारा समाज, पर्व तीज, होली, दीवाली एवं दशहरा, संस्कृति, परंपरा, लोकजीवन, लोकगीत, सामाजिक व्यवस्था, टांडा आदि।

मूल शोध

संसार भर के मानव समाज के जीवन में उनके तीज–त्यौहार बहुत मायने रखते हैं। इन्हीं त्यौहारों के साथ समाज की समस्त खुशियाँ समाहित रहती है। बंजारा समाज की कौम अति प्राचीन काल की है और ये समाज अपने टांडे में अनेक प्रकार के त्यौहार मनाकर आपस में भाईचारा को बढ़ाता है। बदलते मौसम के साथ बंजारा टांडों में त्यौहार की रूप रेखा बदलती रहती है। नये–नये त्यौहार इनके जीवन में अपार हर्ष एवं उल्लास भरते हैं। डॉ. वी. रामकोटी इस संदर्भ में लिखते हैं कि बंजारे पूर्वजों के पर्वों, उत्सव और त्यौहारों को बड़े धूमधाम से हिन्दू धर्म के अनुसार मनाते हैं। पर्वों त्यौहारों में मानव जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त होती है। इनके त्यौहारों में प्रमुख आट्म (उगादि), सीतला (बंजारों की देवी इस देवी को त्यौहार के रूप में मनाया जाता है), तीज, दसराओ (दशहरा) दीवाली (दिवाली), संक्राति होली आदि।"[1]

बंजारा जनजाति के सामाजिक जीवन में पावन त्यौहारों का अत्यन्त गहरा प्रभाव है। जीवन जीने की कला अपने दादा परदादाओं से ग्रहण करते हे आ रहे हैं। यह पर्व त्योहार भी पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही है। इनकी सामाजिक परम्परा का अभिन्न अंग हैं। वैसे तो सभी त्योहारों का महत्व है। लेकिन बंजारा समाज के स्त्री जीवन में तीज त्योहार का घनिष्ठ संबंध है। बंजारा समाज द्वारा पूरे वर्ष मनाए जाने वाले पर्वों की श्रृंखला निम्नलिखित रूपों में प्रस्तुत की जी रही है।

तीज पर्व एवं सामाजिक जन–जीवन

तीज का पर्व बंजारा समाज की कुंवारी लड़कियाँ करती हैं। कुंवारी लड़कियों के जीवन में यह तीज पर्व केवल एक त्योहार नहीं है बल्कि साधना का एक अंग भी है। इसमें कुंवारी लड़कियाँ व्रत भी करती हैं। इस त्योहार के आने से बंजारा टांडों में काफी चहल–पहल मची रहती है। तीज का पर्व हर वर्ष कार्तिक महीने में मनाया जाता है। तीज पर्व प्रथम दिन प्रारंभ होकर दस दिनों तक चलता है। दसवाँ दिन इस पर्व का समापन किया जाता है। यह त्योहार आरंभ करने से पहले कुंवारी लड़कियाँ टांडो के नायक (मुखिया) के घर एकत्रित होकर तीज बोरावणों (तीज बोने) की अनुमति लेती है। इसमें सीतला भवानी की पूजा करते हुए अनुमति लेती है। तीज त्योहार दस दिन के अंदर श्रेणियों में अभिव्यक्त होता है।

तीज का प्रस्ताव एवं टोकरी लाना

तीज पर्व के लिए कुंवारी लड़कियाँ बंजारा मुखिया के घर एकत्रित

होकर अनुमति लेकर तीज की तैयारी में जुट जाते हैं। इस त्योहार को पूर्ण करने के लिए टोकरी की जरूरत होती है। टोकरी में ही तीज के बीज बोये जाते हैं। इस टोकरी को लाने के लिए युवतियाँ तीज के गीत गाते हुए जाती है और उनके भाई डफ बजाते हुए जाते हैं। इस संदर्भ में डॉ. वी. रामकोटी लिखते हैं कि– "तीज का पहल दिन टांडो के लोक ओल्डी (टोकरियाँ) खरीदते हुए या स्वयं बना लेते हैं। लड़के और लड़कियाँ मिट्टी लाने के लिए टांडे से नाचते, गाते हुए डफला के साथ रवाना होते हैं।" [2]

बंजारा समाज के जीवन में गीतों का विशेष महत्व है। जब तीज की टोकरी लेते जाते हैं युवतियाँ तो यह गीत गाते हुए जाती हैं–

"चालोयें बाई ओल्डी लेयेन जावा
पाच–पचासे री ओल्डी मोलावा
ओम आपण तीज बोराबा,
चालोये बाई ओल्डी लेयेन जावा
हाटडिन जाताळी ओल्डी मोलावा।" [3]

मिट्टी लाना (घुड़ लेयेन जालो)

बंजारा समाज की कुंवारी लड़कियाँ जब टोकरी प्राप्त कर लेती है। तो गेहूँ, जौ या चना बोने के लिए मिट्टी लेने समूह में ही जाती है। जहाँ डफला के ताल पर तीज गाती हैं। कहीं–कहीं उस मिट्टी में सात प्रकार के अनाज उग जाते हैं। यह मान्यता है कि जब यह अनाज के बीज अंकुरित होकर इन दस दिनों में जितने लंबे होते हैं तीज पर्व उतना ही सफल माना जात है। अंकुरित अनाज को ही तीज उगाना कहा जाता है। तीज की मिट्टी लाने के संदर्भ में डॉ. पी. रामकोटी जी लिखते हैं कि–"लड़कियाँ भिगोए हुए चने अपने साथ ले जाती हैं। उसे सबसेपहले बेर के पेड़ की सात बार प्रदक्षिणा करती हैं और भिगोए हुए चने को बेर के पेड़ से अटकाती हैं। वहाँ से उपजाऊँ तीज की मिट्टी लाते हैं। उस मिट्टी में खाद भी डालते हैं।"[4]

तीज पहेली प्रथा

बीज बोने के बाद उसकी देखभाल में जुटी महिलाएँ आपस में संवादनात्मक गीत भी गाती हैं। एक दल सवाल करता है। दूसरा दल उसका दवाब देता है। तीज के चबुतरे के पास हर सुहब–शाम लोकगीतों का दौर चलता है। जिसमें सबसे मनोरंजन गीत पहेली पूछने की होती है। लड़कियाँ के दो दल सवाल करते हुए गीत जाती हैं–

"तीजरे बापे नाम काँई हो नायका
वोरो सरस वोन केदीजो नायका
तीजेर बापे नाम गंगाजळ राजा हो नायका
तीजेरी याडी नाम काई हो नायका
वोरो सरस वोन केदीजो नायका

. . . . . .

तीज़ेरे भेने नाम अवरी न गवरी।(गौरी)।" [5]

बंजारे समाज के तीज़ के गीतों में प्रकृति चित्रण से लेकर आस–पास की प्रायोगिक वस्तुएँ समाहित होती है। उसी के अपने लोकगीतों को केन्द्र बनकर संवादात्मक गीत गाते हैं। यह संवाद केवल माल गीत नहीं हैं बल्कि उनके अपनी विरासत है। सभ्यता संस्कृति के परिचायक हैं।

गणगौर (स्त्री–पुरुष प्रतिमा निर्माण)

गणगौर विधि–विधान तीज के नौवें दिन की प्रक्रिया है । इस दिन टांडे की कुंवारी लड़कियाँ गीली मिट्टी से स्त्री एवं पुरुष की प्रतिमा बनाती है तथा इसको तीज के टोकरों के पास स्थापित करती हैं। गण का अर्थ है पुरुष एवं गौर का अर्थ स्त्री होता है। शिव एवं पार्वती की आराधना से इस गणगौर का सीधा संबंध होता है। इस संदर्भ में डॉ. वी. रामकोटी लिखते हैं–"तीज के नौवें दिन गणगौर का कार्यक्रम संपन्न किया जाता है। इस दिन कुंवारी लड़की (बड़ी आयु की कुंवारी लड़कियाँ) उपवास रखती हैं टांडे का नायक भी उपवास रहता है। गणगौर के दिन गौरी पूजा होती है। इसे अञ्जली गणगौर भी कहते हैं। अर्थात, स्त्री–पुरुष की संयुक्त नग्न प्रतिमा ही गणगौर कहलाती है। यह प्रतिमा कीचड़ से बनाई जाती है। टांडे के लोग उस दिन बकरे की बलि देते हैं। उस दिन स्त्री–पुरुष बाल, वृद्ध सभी बहुत आनंद से गौरी पूजा में भाग लेते हैं।" [6]

यह पर्व उल्लास लिए हुए अपने साथ बंजारा टांडे के सभी निवासी को अपनी ओर अनायास ही आकर्षित करता है। जिसमें लोकगीत का दौर चलता है। बनाई गई मूर्तियों को देखकर लड़कियाँ लड़कों को रिझाती है। यह सिद्ध करने का प्रयास करती हैं उनकी स्त्री प्रतिमा सुंदर है पुरुष प्रतिमा ठीक नहीं हैं। गीत गाते हुए कहती है–

"बाई ये तीज बोई हम देवे वास
बाई ये बोई तीज हम देवे वास।

आज नाचे लाग बाई हम देवे वास

आचो परिये बाई देवी हमारे वास।।" [7]

देवी–देवताओं का सुमरन करना इनके गीतों की विशेषता होता है। अपनी समस्त जीवनगत स्थिति को अपने देवी–देवताओं को समर्पित कर देती हैं। अपने पारंपरिक देवी–देवताओं का सुमिरन अपने लोकगीतों के माध्यम से सकल समाज करते हुए चलता है।

बोल्डी वरावणो (टोकरी विसर्जन)

टोकरी विसर्जन तीज का अंतिम पड़ाव है। दस जिन तक चले हर्षोल्लास के पावन पर्व तीज का समापन टोकरी के नहीं, तालाब में प्रवाहित करके किया जाता है। इस संदर्भ में डॉ. वी. रामकोटी का कथन है –"टांडे के लोग उस डिमक़ी के उजाले में तालाब तक पहुँच जाते हैं। टांडे की झुंड गीत गाकर टोकरियों को तालाब में बहा देते हैं। उसके बाद तालाब के किनारे छोटे–बड़े भाई–बहन के पैर 'पीड़िया' (चकले से बनाते है पर रखकर धोते हैं। क्योंकि बंजारा समाज में बहनों का स्थान लक्ष्मी देवी के समान होता है। बहनों के पैर धोने का कार्य होने के बाद टांडे वाले लौटकर आते हैं और इससे तीज का अनुष्ठान संपन्न होता है।" [8]

होली पर्व एवं सामाजिक जन–जीवन

बंजारा समाज एवं होली पर्व का अंत संबंध ऐसा है जैसे जल में नमक धुला हों होली के आगमन से ही बंजारा समाज में चहल–पहल विशेष रूप से बढ़ जाती है। होली पर्व अति प्राचीन काल से ही बंजारा समाज के पूर्ववासी को मनाया जाता है। वैसे इसका रूप बसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। एक महीने तक लगभग इस पर्व के रंग से बंजारा समाज उबर नहीं पाता है। इस बीच बकरे, मुर्गे, सुअर की दावत तथा दारू की खुमारी चलती रहती है। यह होली पर्व का प्रतीक है। बंजारा समाज अपने बैर–भाव को भुलाकर समस्त टांडे को गले लगाते हुए चलता है। इस संदर्भ में प्रो. मोतीराज राठसोर लिखते हैं– "होली तो बस होली है। पहले जमाने में तो होली एक महीने पहले टांडे में आ जाती। पहाड़ियों की गोद में बसे हुए टांडों में नंगार की डपली की धुन गूँजने लगती, उसमें मोवडा के फूल का नशा बूढ़े टांडे को जवान बना देती।"[9] होली पर्व प्रेम हर्ष एवं उल्लास का पर्व है। सकल ह्रदय को बाँधने वाला पर्व है। आपस में भाईचारा को पनपाकर एक–दूसरे को गले मिलाने वाला पर्व है। बंजारा समाज के उन्मुक्त कंठ गा उठते हैं–

"होळी आई रे, भाई–भाई रे

आवोर काका दादा, आपण, रमा होळी
भाई–भाई रे, होळी रमा रे
बार मिनाम आयी रे होळी भाई–भाई रे
जीवियारे जगीयातो फेर खेलिया होळी ,
हनुमान जोद तुकारी मारोरें, होळी रमा रे।" [10]

होली का आगमन ही स्त्री–पुरुष, बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करने लगता है। डफ की छाप पर बंजारा समाज के पैर मदमस्त थिरकने लगते हैं।

धुंड संस्कार

यह संस्कार होली के अवसर पर किया जाता है जिससे इस संस्कार एवं होली पर्व का स्वाद और बढ़ जाता है। इस संदर्भ में डॉ. गणपत राठोर का कथन है कि–"बंजारा जनजाति के कुछ विशिष्ट कुल में लड़का हुआ तो उसका होली के दिन धुंड संस्कार किया जाता है। धुंड संस्कार यह शिशु का एक जन्मोत्सव ही है। जिसे बंजारे बड़ा धूमधाम से संपन्न करते हैं।" [11]

होली पर्व के आठ दिन पूर्व यह संस्कार संपन्न कराया जाता है जिससे स्त्री एवं पुरुष लेंगी गीत गाते है। इस गीत में थोड़ी सुरूर चढ़ाने के लिए दारू, भांग, गाजा का सेवन काया जाता है जिससे नशा में निमग्न होकर बंजारा समाज डफ पर थाप देता जाता है और पाँव अबाध रूप से थिरकते रहते है। इस संदर्भ में गीत गाए जाते हैं–

"छोरा काढये गेरणी धुंड करिया
टाळ–टाळ गेरियाँ तोपर छोडिया
दाडिवाळ बकरारों गोट करियाँ
छोटा काढये गेरणी धुंड करियाँ।" [12]

दीपावली (दीवाली) पर्व एवं सामाजिक जन–जीवन

दीपावली का पर्व संपूर्ण भारतवर्ष में बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस दीपोत्सव में प्रकाश में प्रत्येक घर गाँव नहा उठता है। यह पर्व कार्तिक मास में पड़ता है। बंजारा समाज के जन–जीवन में यह पर्व कार्तिक मास की अमावस्या के दिन विशेष रूप से मनाया जाता है। इस दिन बंजारा समाज बकरी की बलि देकर अपना उल्लास उजागर करता है। बंजारा समाज दीपावली को दो दिन मनाता है। इसके जन–जीवन में दीपावली को गोधन के रूप में पूजते हैं वैसे गोधन बंजारों की बहुमूल्य संपत्ति रही है इसलिए इस दिन बंजारा समाज अपने पशुओं को नहला–धुलाकर उनकी पूजा करता है।

इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों का मत देखा जा सकता है डॉ. वी. रामकोटी जी लिखते हैं कि "बंजारे लोग दीवाली लक्ष्मी देवी को मां कहकर उदित करते हैं बंजारे दिवाली को गांव मे गोवर्धन की पूजा के रूप में मनाते हैं बंजारे दिवाली के दो दिन मनाते हैं दिवाली के पहले दिन को कालमस कहते हैं इस दिन बंजारे देवी की पूजा करते हैं और बकरे की बलि देकर दावत करते हैं देसी दारू पीकर मास युक्त भोजन के साथ मस्त रहते हैं।" [13]

इस प्रकार बंजारा समाज दो दिन का दीवाली पर्व मनाता है जिसमें विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान करते हुए चलता है। लक्ष्मी की पूजा इस पर्व में विशेष देखी जा सकती है। बंजारा समाज की जो विशेष चीज दिखाई देती है इस पर्व में वह है गोवर्धन की पूजा करते हैं।

निष्कर्ष

समाज के अंतर्गत लोकगीत परम्परा समाज के जीवन गत गतिविधियों का लेखा–जोखा है। समाज के विभिन्न रुपों का यह लोकगीत परम्परा परिचय करवाते हुए चलते हैं। बंजारा समाज का जन–जीवन बंजारा लोकगीतों में स्पष्ट रूप से झलकता है। इस समाज का लोकगीत पारंपरिक होते हुए भी एक नयापन लिए हुए है। अपने अंदर यह लोकगीत बंजारा समाज के जीवन के स्पष्ट रूप से उतारते हुए चले गए हैं। तीज पर्व बंजारा समाज के स्त्री जीवन की कथा कहते हैं जहाँ हम देखते हैं कि तीज पर्व के अवसर पर समस्त टांडे की कुंवारी लड़कियों का जीवन गत विशेषताएँ स्पष्ट दर्शित होती है। यह पर्व श्रद्धा एवं विश्वास का पर्व है। होली पर्व की विशेष छाप बंजारा समाज पर पड़ती है। इस पर्व के बूढ़े से लेकर जवान तथा बाल वृद्ध सभी अपने अंदाज में जीवन यापन करते हैं। सबके पास एक अलग स्फूर्ति है। इस पर्व के दौरान टांडे में खुशी का माहौल होता है। इसमें जन्मजात शिशु का नामकरण संस्कार विशेष उल्लेखनीय है। इतना ही नहीं शोकाकुल परिवार को भी यह पर्व खुशी प्रदान करता है।

दीवाली पर्व अपने आप में पवित्रता का पर्व है धन–वैभव की रखवाली करने वाला यह पर्व बंजारा टांडे में गोवर्धन पूजा का विशेष अनुष्ठान देखने को मिलता है। क्योंकि सदियों से यह समाज गौ–पालक रहा है। इसलिए पशुओं की विशेष पूजा अर्चना करता है। गाय के गोबर तक की पूजा धन–वैभव की रखवाली माँ लक्ष्मी के रूप में पूजा जाता है।

दशहरा के अवसर पर अपनी देवियों की आराधना यह समाज विशेष रूप से करता है। दशहरा के अवसर पर ही बंजारा समाज अपनी ताकत का एहसास भी कराता है। इसी दिन अपने पारंपरिक से लेकर आधुनिक हथियारों

की पूजा करते है। इस पर्व पर अपनी कुल देवियों को बकरे की बलि देकर टांडे में जागरण किया जाता है। इस प्रकार बंजारा समाज के जीवन में पर्व विशेष स्थान रखते हैं। यह पर्व बंजारा समाज के जीवन में चार–चाँद लगाने काम करते हैं।

डॉ. ए. बाबू
सहायक प्रोफेसर
9440272878
adebabunaik@gmail.com

संदर्भ ग्रंथसूची

1. डॉ. वी. रामकोटी, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–5
2. डॉ. वी. रामकोटी, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं.–5
3. बंजारा लोकगीत और समाज, पृ.सं.–113 (गीत सं.76)
4. डॉ. वी. रामकोटी, बंजारा लोकगीत संकलन, पृ.सं–108
5. डॉ. वी. रामकोटी, बंजारा लोकगीत संकलन,पृ.सं–8
6. बंजारा लोकगीत और समाज, पृ.सं.–182
7. बंजारा लोकगीत और समाज, पृ.सं.–105
8. प्रो.मोतीराज राठोर, प्रचानी बंजारा समाज व्यवस्था,पृ.सं.–125
9. बंजारा लोकगीत और समाज, पृ.सं.–105
10. गणपत राठोर, बंजारा लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन,पृ.सं–89
11. बंजारा लोकगीत और समाज, पृ.सं.–105
2 बंजारा लोकगीत और समाज, पृ.सं.–105
3. प्राचीन बंजारा समाज व्यवस्था मोतीराज राठोड 129